नमः श्रीवर्द्धमानाय ।

धूर्ताख्यान ।

[एक श्वेताम्बर भिक्षुककृत संस्कृत ग्रन्थका
हिन्दी अनुवाद ।]

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बईने
निर्णयसागर प्रेसमें छपाकर
प्रकाशित किया ।

श्रीवीर नि० सवत् २४३८

अप्रैल सन् १९१२.

प्रथमावृत्ति ।]

[मूल्य तीन आना ।

निवेदन।

संस्कृतमें धूर्ताख्यान नामका ग्रन्थ एक श्वेताम्बर भिक्षुकका बनाया हुआ है। उस ग्रन्थका गुजराती अनुवाद बम्बईके श्रावक भीमसी माणिक द्वारा प्रकाशित हुए बहुत दिन हो गये। हमारी इच्छा थी कि मूल ग्रन्थपरसे इसका हिन्दी अनुवाद कराया जाय, परन्तु मूल ग्रन्थके प्राप्त न होने के कारण हम ऐसा नहीं कर सके लाचार होकर हमें गुजराती अनुवादकी ही शरण लेनी पड़ी और उसी परसे यह अनुवाद कराना पड़ा। मूल ग्रन्थके न मिलनेसे इसमें बहुत से स्थल सशंकित रह गये हैं, जिनके लिये हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं। आगामी आवृत्तिके प्रकाशित होने तक यदि मूल पुस्तक मिल जायगी, तो उसपरसे यह त्रुटि पूर्ण करा दी जायगी।

प्रकाशक।

नमः श्रीस्याद्वादाय ।

धूर्ताख्यान ।

प्रथमाख्यान ।

मालवदेशमें उज्जयनी नामकी एक नगरी है। उसके उत्तरकी ओर एक सघन वन है । कहते हैं कि, एक वार उस वनमें ढाई हजार धूर्त आकर ठहरे। ये धूर्त्त महामायावी, महानिर्दयी और महा विश्वासघाती थे । ऐसा कोई भी बुरा कार्य न था, जो ये न कर सकते हों । वातोंमें ये ऐसे थे कि. वड़ो वड़ोंको अंधा कर देते थे । नाना-प्रकारके धूप, अंजन, और चूर्णादि इन्हें सिद्ध थे। स्तंभिनी, अवस्वापिनी आदि अनेक विद्याएं ये जानते थे । आवाज वदलकर. रंग वदलकर, वेष वदलकर ये चाहे जिसको ठग सकते थे । इन धूर्तोंके पांच मुख्या-धिकारी थे—मूलदेव, कंडरीक, एलापाढ, शंस और खंडवणा। इन पांचोकी पांच पांच सौकी एक एक टोली थी । पांचवीं टोलीमें सव स्त्रियां ही स्त्रियां थीं । और उनकी अधिकारिणी खंडवणा भी स्त्री ही थी । यद्यपि ये पांचों ही धूर्तनायक धूर्ततामें खूव ही वढ़े चढ़े थे,

परन्तु इनमें जो मूलदेव था, वह तो अद्वितीय ही था। उसकी बराबरी करनेवाला दूसरा कोई धूर्त संसारमें नहीं मिल सकता था।

ये लोग कहींसे विचरते २ उज्जयनीके पासके वनमें आकर ठहरे ही थे कि, एकाएक मूसलाधार वर्षा होने लगी। देखते २ कुआ, बावड़ी, तालाब, आदि सब जलाशय, लबालब भर गये, नदियोंके पूर आ गये, और सुगम मार्ग दुर्गम हो गये। लोगोंका घरसे बाहिर निकलना कठिन हो गया। इस घोर वर्षाके कारण दुखी होकर धूर्तमंडली विचार करने लगी कि, इस समय जब कोई मनुष्य घरसे बाहिर ही नहीं निकलता है, हम लोग किसे ठगकर अपना निर्वाह करें? यहां हमको भोजन कौन लाके दिये देता है? भूखके मारे प्राण निकल रहे हैं। यह सुनकर धूर्तशिरोमणि मूलदेव बोला—सुनो, भोजनका एक उपाय मैंने सोचा है। आज हम सब लोगोंको अपनी २ देखी सुनी अनुभव की हुई एक २ दो २ कथाएँ कहनी चाहिये। उन कथाओंको सुनकर हममेंसे जो कोई पुरुष उनमें सन्देह करेगा—उन्हें असत्य ठहरावेगा; यह कहेगा कि, यह बात कैसे मानी जा सकती है, उसीको हम सबके भोजनका खर्च देना पड़ेगा। उसका फर्ज होगा कि, हम सबको आज भोजन करावे। और उन कथाओंको हममेंसे जो कोई भारत रामायण भागवत, पुराणादि ग्रन्थोंके प्रमाण देकर सच्ची सिद्ध कर देगा, और आश्चर्यकारी बातोंसे हम लोगोंका मनोरंजन करेगा, वह सबसे

अधिक बुद्धिमान गिना जायगा और उसे यह भोजनका खर्च नहीं देना पड़ेगा।

कंडरीक—आपने बहुत ही अच्छा उपाय सोचा। धन्य है! अब हम सबमें आप ही सबसे बड़े हैं, इसलिये अपनी देखी सुनी कथाका प्रारंभ सबसे पहिले आप ही कीजिये।

मूलदेव—जब मैं जवान था, तब निरन्तर मनोवांछित पदार्थोंके पानेके प्रयत्नमें लगा रहता था। एक दिन जब खूब पानी बरस रहा था, मैं अपने स्वामीको प्रसन्न करनेके लिये सिरपर बोझा रखके, एक हाथमें छाता लेकर और दूसरे हाथमें कमंडलु आदि उपयोगी सामग्री लेकर घरसे बाहिर निकला। कुछ दूर चलकर रास्तेमें मैंने देखा कि, एक पर्वतके समान बड़ा भारी मदोन्मत्त हाथी मेरे साम्हने लपकता हुआ आ रहा है। बस, उसे देखते ही मैं डरके मारे कांपने लगा। मैं सोचने लगा—अब मैं क्या करूं? मैं अपने शरीरको कहां छुपाऊं? किसकी शरण लूं? जब हाथी बिलकुल पास आ गया, तब मृत्युके भयसे मुझे और तो कुछ नहीं सूझा, मैं अपने हाथके कमंडलुको नीचे रखकर उसीमें घुस गया। हाथी भी होशयारीमें मुझसे कुछ कम नहीं था। मुझे कमंडलुमें घुसता देख वह भी बिना बिलम्ब किये मेरे पीछे कमंडलुमें घुस गया। अब कालको बिलकुल सिरपर आया हुआ देखकर मैंने अपनेको बचानेके लिये उस कमंडलुके भीतर ही यहांसे वहां भागना शुरू किया। इस तरह पूरे

छह महीनेतक मैं हाथीरामकी चुंगलसे आपको बचाता रहा। आखिर एक दिन मैं कमंडलुकी ग्रीवामेंसे निकलकर बाहिर भागा। हाथी भी मेरे पीछे ग्रीवामेंसे बाहिर भागा। उस समय ग्रीवामेंसे उसका सारा शरीर तो निकल आया, परन्तु पूंछका एक बाल अटक रहा। बस, हाथीराम कैद हो गये। उन्हें वहांसे चलना मुश्किल हो गया। इधर तब तक मैं भागकर बहुत आगे निकल गया। अब मेरा डर किसी तरह छूटा। इस आपत्तिसे छूटकर मैं कुछ दूर आगे चला कि, मार्गमें गंगानदी आड़ी पड़ी थी। नदीमें पानी बहुत गहरा था और दूसरा कोई रास्ता था नहीं, इससे मुझे बड़ी व्याकुलता हुई। निदान कोई उपाय न देखकर मैं गंगामें धँस गया और उसे हाथोंसे पारकर अपने स्वामीके घर पहुंचा और वहां मैंने छह महीनातक भूख और प्यासकी वेदना सहकर तथा मस्तकपर पानीकी अखंड वर्षा सहनकर अपने स्वामीकी वंदना की। इसके पश्चात् स्वामीसे क्षमा मांगकर मैं वहांसे चल दिया और यहां उज्जयनीके समीप तुम सबसे आकर मिला। मेरी कही हुई यह घटना यदि सत्य हो, तो कोई उदाहरण देकर सबको विश्वास करा दो, और यदि असत्य हो—इसे माननेके लिये तुम तयार नहीं हो, तो इन सब धूर्तोंको भोजन कराओ।

कंडरीक—आपने जो कथा कही, उसमें मुझे तो कोई सन्देह नहीं होता है। मेरी समझमें जो भारत रामाय-

णादि ग्रन्थोंको जानता है, वह तो आपके वचनोंको असत्य कह ही नहीं सकता है।

मूलदेव—अच्छा, तो तुम उक्त ग्रन्थोंसे यह सिद्ध करके दिखलाओ कि, कमंडलुमें हाथी कैसे समा गया? उसमें वह छह महीनातक कैसे घूमता रहा? उस कमंडलुकी टोंटीमेंसे मैं और हाथी कैसे निकले? सर्वांग हाथी निकलकर उसकी पूंछका वाल कैसे अटक रहा? मैं गंगानदीको हाथोंसे पार कैसे कर गया? और छह महीनातक मैं भूख प्यासकी वेदनाको तथा वर्षाकी जलधाराको कैसे सहन करता रहा?

कंडरीक—जो भारत रामायणादि ग्रन्थ सुने जाते हैं। यदि वे सत्य हैं, तो आपका कहना भी सत्य है। क्योंकि आपने अपनेपर वीती हुई जिस घटनाका वर्णन किया है, उक्त ग्रन्थोंमें ऐसी वीसों घटनाएँ हैं। सुनो, इन ग्रन्थोंमें लिखा है कि, ब्रह्माके मुखसे ब्राह्मण निकले, भुजाओंसे क्षत्रिय निकले, जंघाओंसे वैश्य निकले और पैरोंसे शूद्र निकले। अव सोचो कि, जगतकी उत्पत्तिके पहिले जव चारों वर्णोंके मनुष्य जो कि, अगणित हैं, ब्रह्माके शरीरमें समाये थे, तव आपके कमंडलुमें आप और हाथी दो समा गये, तो कौनसा अचरज हुआ? एक वार ब्रह्मा और विष्णु इस वातपर झगड़ते हुए कि, हम दोनोंमें कौन वड़ा है, शिवजीके पास गये। शिवजीने कहा, तुम दोनोंमेंसे जो कोई मेरे लिंगका अन्त ले आवे, वही वड़ा है। यह सुनकर ब्रह्माजी तो ऊपरको चले और

देवताओंके हजार वर्षतक बराबर चले गये, परन्तु उन्हें लिंगका अन्त नहीं मिला और विष्णु नीचे पातालकी ओर चले परन्तु वे भी हजार वर्षतक चलकर बिना अन्त पाये ही लौट आये! अब कहो, जब इतना बड़ा अंग पार्वतीके शरीरमें समा जाता था, तब आपके कमंडलुमें हाथी समा गया, इसमें क्या आश्चर्य हो सकता है? और भारतमें व्यासजीने कहा है कि, वंशपर्वमेंसे अर्थात् बांसकी पोरियोंमेंसे कीचक आदि सौ भाई उत्पन्न हुए हैं। इसकी कथा यों है कि—विराट राजाकी पट्टराणीके पुत्र उत्पन्न नहीं होता था, इसलिये उसने एक ऋषिके आश्रममें जाकर उसकी आराधना की। ऋषिने प्रसन्न होकर एक लड्डू मंत्रित करके रानीको दिया और कहा कि, इसे किसी जंगलकी झाड़ीमें बैठकर भक्षण कर लेना, इससे तुझे सौ पुत्रोंकी प्राप्ति होगी। रानी आज्ञानुसार जंगलमें गई और एक बांसोंकी झाड़ीमें बैठकर और वहां लड्डूका भक्षण करके अपने घर चली आई। उस समय उस बांसोंके भिड़ेमें एक गांगिल नामके ऋषि बहुत समयसे तपस्या कर रहे थे। वहांसे थोड़ी ही दूरपर एक नदी थी। उसके किनारे एक अप्सरा नग्न होकर स्नान कर रही थी। ऋषिकी दृष्टि अचानक उस अलौकिक रूपवती अप्सरापर पड़ी, जिससे उनके चित्तमें विकार उत्पन्न हो गया। ज्यों ज्यों वे उस अपूर्व रूपराशिको निहारने लगे, त्यो त्यों प्रचंड कामाग्निसे तपकर उनके अमोघ वीर्यके बिन्दु एक एक करके टपकने लगे।

नीचे एक सछिद्र वांस पड़ा हुआ था, उसमें वे बूंदें जिनकी कि संख्या धीरे २ एक सौ हो गई थी, प्रवेशकर गई। इसके पश्चात् वे महर्षि तो अपने चित्तको सँभाल कर वहांसे चल दिये और वह शतवीर्य विन्दुवाला वांस वहींपर पड़ा रहा। पीछे किसी तरहसे विराट राजाको इस वातकी खवर लगी, इसलिये उसने उस वांसको अपने यहां मंगा लिया। सो उसके यहां उक्त वांसके पर्वोंमेंसे सर्वांगोपांग सहित १०० पुत्र उत्पन्न हुए। उनमे पहिला पुत्र जिसका नाम कीचक था (कीचक अर्थात् वांससे उत्पन्न होनेके कारण) नवहजार गजका था। विराट राजाकी रानीने इन सौ पुत्रोंको अपने ही मान लिये और उनकी उसीके पुत्रोंके नामसे प्रसिद्धि हुई। अव आप सोच लीजिये कि, जव एक वांसमें प्रसव समयपर्यन्त सौ पुत्र वने रहे, तव एक कमंडलुमें केवल आप और एक हाथी समा गया, तो क्या आश्चर्य हुआ? इसके सिवाय यह वात भी पुराणोंमें प्रसिद्ध है कि, महादेव अपनी जटाओंमें एक हजार वर्षतक गंगानदीको रक्खे रहे। ऐसी अवस्थामें आपका और हाथीका कमंडलुके भीतर छह महीनेतक वने रहना कोई वड़ी वात नहीं है। और जव महादेव गंगाको हजार वर्षतक अपनी जटाओंमें ही घुमाते रहे, तव आपका छह महीनेतक हाथीको कमंडलुमें घुमाते फिरना कौन कह सकता है कि, असंभव है?

मूलदेव—खैर, यह तो हमने मान लिया। अव यह

बतलाओ कि, कमंडलुकी ग्रीवामें हाथीकी पूंछका बाल कैसे अटक रहा?

कंडरीक—आपका यह संशय दूर करनेके लिये मैं एक पुराणका वचन कहता हूं। महाप्रलयके समय जब पृथ्वी, तेज, वायु, आकाश, स्थावर, त्रस, मनुष्यादि सारे प्रपंचोंका अभाव था, तब विष्णु महाराज जलासनपर बैठकर तप कर रहे थे। उस समय उनके नाभिकमलमेंसे ब्रह्माजी कमल तथा दंड हाथमें लिये हुए बाहिर निकले। कोशिशसे वे तो बाहिर निकल आये, परन्तु उनके हाथमें जो कमल था, वह विष्णुभगवानकी नाभिमें अटक रहा। जब हमारे पूज्य पुराणोंमें यह बात लिखी है, तब आपके कमंडलुके हाथीके बाहिर निकल आनेपर भी उसकी पूछका बाल अटक रहना कैसे अयुक्त हो सकता है?

मूलदेव—और कमंडलुकी टोंटीमेंसे मैं कैसे निकल आया?

कंडरीक—बहुत अच्छी तरहसे। लो सुनो, मैं इस विषयमें महाभारतका एक प्रमाण देता हूं—एक बार ब्रह्माजी तपस्या कर रहे थे। उन्हें तप करते २ जब हजार वर्ष बीत गये, तब देवोंको बड़ी भारी चिन्ता हुई। वे विचार करने लगे कि, जैसे बने तैसे इनके तपमें विघ्न करना चाहिये नहीं तो पीछे बड़ी कठिनाईमें पड़ना पड़ेगा। इन्द्रने कहा कि, इसके लिये तो एक स्त्री ही परमयोगी शस्त्र है। एक वीतराग देवको छोड़कर गौतम, वशिष्ठ, पाराशर, यमदग्नि, कश्यप, अगस्त्य, आदि

महर्षि और हरिहरादि सब स्त्रियोंके दास हैं। स्त्रियां चाहे जिसको चाहे जैसा नाच नचा सकती हैं। महादेवजी तक तो स्त्रीके दर्शनसे डगमगा जाते हैं। तुम्हें मालूम होगा कि एक वार महादेवजी यज्ञकर्म करते समय ऊर्द्धावस्थित वस्त्रा पार्वतीको देखकर विकारयुक्त हो गये थे और उस समय उनका जो वीर्य स्खलित हुआ था, उसके एक बूंदके कलशमें पड़जानेसे द्रोणाचार्य उत्पन्न हो गये थे। इसलिये ब्रह्माजीके लिये भी किसी स्त्रीकी ही तजवीज करनी चाहिये। ऐसा कहकर उन्होंने स्वर्गकी वेश्या तिलोत्तमाको बुलाया और उसको आज्ञा दी कि, तू जाकर ब्रह्माजीके तपको नष्ट कर दे। तिलोत्तमा आज्ञानुसार सजधजके तयार हुई और ब्रह्माजीके सम्मुख जाकर नृत्य करने लगी। उस समय उसके सघन, कठोर और उठे हुए पीनस्तन, गुलावी गाल, मनोहर नाभिभाग, केलेके स्तंभ जैसी सुचारु जंघाएँ, कंपित होते हुए पुष्ट नितम्ब, आदि अंग देखकर और नानाप्रकारके हावभाव विभ्रम विलास अवलोकन करके ब्रह्माजीके शरीरमें विकारकी विजली दौड़ गई। वे सम्पूर्ण इन्द्रियोंके व्यापारसे शून्य होकर तिलोत्तमाकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। जब तिलोत्तमाने देखा कि, मेरा वार खाली नहीं गया है; तब वह साम्हनेसे हटकर दक्षिण दिशाकी ओर नृत्य करने लगी। ब्रह्माने अपने मुंहको फेरना उचित न समझकर उस ओरको एक नया मुख बना लिया और रूपामृतका पान करना जारी रक्खा। तबतक ति-

लोत्तमा पीछेकी ओर मुड़ गई। ब्रह्माजीने उस ओर भी मुंह बनाया, परन्तु तबतक तिलोत्तमा उत्तरकी ओर फिर गई और जब उस ओर भी ब्रह्माजीने मुंह बना लिया, तब वह आकाशमें ऊपर नृत्य करने लगी। ब्रह्माजी तो उसके दास हो चुके थे। उन्हें उसके देखे विना कहां चैन थी? लाचार उन्हे ऊपरकी ओर भी एक पांचवें मुखकी रचना करनी पड़ी। ईश्वर अर्थात् महादेवजीने जब देखा कि, ब्रह्मा कामके वशीभूत हो गया है, तब उन्होंने आकर अपने नखोंसे उसके उस पांचवें मुंहको काट डाला। इससे ब्रह्माजीको बड़ा क्रोध आया। उन्होंने लाल लाल नेत्र करके मस्तकपर आये हुए पसीनेको तर्जनीसे पोंछकर जमीनपर छिड़क दिया। फिर क्या था, उससे एक स्वेतकुंडली नामका बलवान पुरुप उत्पन्न हुआ और ब्रह्माजीकी आज्ञा लेकर शिवजीके पीछे दौड़ा। शिवजी भागे। भागते २ बदरिकाश्रममें पहुंचे। वहां विष्णु भगवानसे मिलकर उन्होंने कहा कि, मेरी रक्षा करो। तव विष्णु महाराजने अपने कपालमेंसे एक रक्तकी शिरा खोल दी। उससे रक्त बहने लगा और नीचे ब्रह्माका पाचवां मस्तक रख दिया जिसे कि शिवजी काट लाये थे; उसमें रक्त भरने लगा। देवताओंके हजार वर्षतक विष्णु भगवानके कपालकी शिरासे रक्त बहता रहा, परन्तु वह पाचवाँ मस्तक पूरा नहीं भरा गया। यह देखकर महादेवजीने अपनी एक अंगुलीसे उसे पोंछा। उस समय ब्रह्माका मस्तक, विष्णुकी रक्तधारा और शिव-

जीकी अंगुली इन तीनोंके संयोगसे रक्तकुंडली नामक पुरुषकी उत्पत्ति हुई। यह भी शिवजीसे आज्ञा मांगकर स्वेतकुंडलीके साथ लड़ने लगा। दोनोंकी लड़ाई देवताओंके एक हजार वर्षतक होती रही। निदान देवोंने वीचमें पड़कर इस लड़ाईको रोकी और उक्त दोनों योद्धाओंमेंसे एक तो इन्द्रको सोंप दिया और दूसरा सूर्यको सोंप दिया और यह कह दिया कि, जव भारतका युद्ध हो, तव तुम इन दोनोंको युद्धकी वृद्धिके लिये मनुष्य लोकमें भेज देना। तदनन्तर भारतके समय सूर्यने कुन्तीके रूप लावण्यपर मोहित होकर उसके साथ संभोग किया, जिससे रक्तकुंडली नामका योद्धा उसके गर्भमें आ गया। पूरे नव महीने वीतनेपर कुन्तीने उसे अपने कर्ण (कान) के रास्तेसे जना, जिससे उसका नाम कर्ण हुआ। जव छोटेसे कानमेंसे कर्ण जैसा शूर वीर उत्पन्न हो गया, तव कमंडलुकी टोंटीमेंसे आपका निकलना क्या वड़ी वात है?

मूलदेव—और अगाध जलसे भरी हुई गंगानदीको मैं अपनी भुजाओंसे कैसे तिरा होऊंगा?

कंडरीक—रामायणमें लिखा है कि, रामचन्द्रजीकी आज्ञासे जव सीताका पता लगानेके लिये हनुमानजी लंकाको गये थे, तव समुद्रको हाथों हाथ ही तैरकर गये थे। जिस समय वे सीताजीसे जाकर मिले थे, उस समय सीताजीने रामकी कुशल क्षेम पूछनेके वाद प्रश्न किया था कि, तुम समुद्रके इस पार कैसे आये? तव हनुमानने हाथ जोड़कर कहा था—

तव प्रसादात्पवनप्रसादाद्भर्तुश्च ते देवि तव प्रसादात् ।
त्रिभिः प्रसादैरनुगम्य तोयं तीर्णो मया गोष्पदवत्समुद्रः ॥

अर्थात्—हे देवी, आपके, पवनके और आपके पति श्रीरामचन्द्रके इस तरह तीनोंके प्रसादसे मैं समुद्रको 'गोष्पद' के समान सहज ही तैरकर आ गया हूं। अब यदि बड़े भारी समुद्रका एक गोष्पदके समान तिर जाना सत्य है, तो आपका नदीका तैर जाना कैसे असंभव हो सकता है?

मूलदेव—मैं छह महीनेतक जलकी धारा मस्तकपर कैसे धारण किये रहा?

कंडरीक—जब सब देवोंने मिलकर गंगाजीसे मनुष्य लोकमें पधारनेके लिये प्रार्थना की, तब गंगाने कहा, मैं नरलोकके कल्याणके लिये नीचे आनेको तो तयार हूं, परन्तु यह तो बतलाओ कि, मुझे आकाशसे नीचे गिरते समय कौन धारण करेगा? महादेवजीने कहा इस कार्यके लिये मैं तयार हूं। मै तुम्हें धारण कर लूंगा। गंगाजी आकाशसे नीचे उतरी और शिवजीने उन्हें अपनी जटाओंमें धारण कर लिया। दिव्य सहस्र वर्षतक वे उसे धारण किये रहे। इस तरह जब इतनी बड़ी गंगाकी धाराको महादेवजी हजारों वर्षोंतक मस्तकपर धारण किये रहे, तो आपका छह महीनेतक जलकी धाराको मस्तकपर रखना कैसे असत्य हो सकता है? मेरी समझमें आपने जितनी बातें कही हैं, वे सबकी सब सत्य हैं। उनमें बाल बराबर भी झूठका मेल नहीं है।

इति प्रथमाख्यानक ।
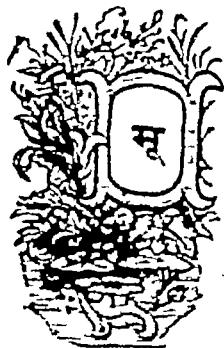
द्वितीयाख्यान ।

मूलदेव—मित्र कंडरीक, अब तुम अपनी देखी सुनी अनुभवकी हुई किसी घटनाका वर्णन करो ।

कंडरीक—मैं अपनी वाल्यावस्थामें वड़ा भारी अविनयी और उपद्रवी था । मेरी वुरी चालोंसे तंग आकर मेरे माता पिताने मुझे घरसे निकाल दिया । मैं नाना देशों और ग्रामोंमें भ्रमण करता हुआ एक ऐसे ग्राममे पहुंचा, जहां अगणित गाय, भैंस, वकरी, हाथी, घोड़े, आदि पशु थे, नानाप्रकारके फल पुष्पोंसे लदे हुए वृक्षोंके वगीचे थे, और धन धान्यसे सुखी सव लोग थे । उस ग्राममें एक वड़ा भारी वड़का झाड़ था । उस झाड़के नीचे एक अतिशय प्रभावशाली कमल नामका यक्ष रहता था । उसकी पूजा वन्दना करनेके लिये वहुतसे महाजन शुद्ध निर्मल वस्त्र पहिनकर और फल फूल धूपादि सामग्री लेकर आते थे और इच्छित वर पाकर चले जाते थे । यह देखकर मैं भी यक्षको प्रणाम करनेके लिये गया । जिस समय मैं वहां गया, उस समय वहां वहुतसे ग्रामवासी क्रीड़ा कर रहे थे । थोड़ी ही देरमें अस्त्रशस्त्रोंसे सज्जित एक वड़ा भारी चोरोंका दल पकड़ो, छीन लो, मारो, आदि कठोर शब्द करता हुआ वहां आ पहुंचा । उसे देखते ही लोगोंको वड़ा भय हुआ । सव लोग यहां

वहां अपनी रक्षाका उपाय ढूंढ़ने लगे। अकस्मात् उन्होंने पासमें एक खरबूजा पड़ा देखा। बस, सब लोगोंके जीमें जी आया। मैं और वे सबके सब उस खरबूजेके भीतर घुस गये और वहां आनन्दसे क्रीड़ा करने लगे। उधर जब चोरोंने देखा कि, लोग हमको देखकर भाग गये, तब वे भी निराश होकर लौट गये। चोरोंको गये समझकर हम बाहिर निकलना ही चाहते थे कि, एक बकरी चरती २ वहां आई और उस खरबूजेको जिसमें कि हम सब छुपे हुए थे, निगल गई। इतनेहीसे खैर नहीं हुई। बकरीको एक अजगर सर्प निगल गया और उस अजगरको एक ढीक नामका विशाल पक्षी निगलकर एक बड़के वृक्षपर उड़कर जा बैठा। जिस समय यह पक्षी बड़पर जाकर बैठा था, उसी समय एक राजा वहां आकर ठहरा था। उसका एक मदोन्मत्त हाथी था। महावतने पक्षीके नीचे लटकते हुए पैरके एक पंजेको बड़की शाखा समझ कर उससे अपना हाथी बांध दिया। थोड़ी देरमें पक्षीने ज्यों ही अपना पैर ऊपरको उठाया, त्यों ही हाथी ऊपरको खिंचा और उसने कष्टके कारण चिंघाड़ मारी। हाथीवान् चिल्लाता हुआ दौड़ा कि कोई हाथीको उड़ाये लिये जाता है। यह खबर राजाके पास भी पहुंची। उसने अपने योद्धाओंको आज्ञा दी कि, हाथीको जैसे बने तैसे बचाओ। बस आज्ञाकी देर थी कि, वे दौड़ गये और उन्होंने शस्त्रोंसे उस पक्षीके पंख काट डाले। जब वह पृथ्वीपर गिर पड़ा, तब राजाने उसके विशाल पेटको

चीरनेकी आज्ञा दी। पेट चीरनेपर उसमेंसे अजगर निकला, अजगरके पेटमेंसे बकरी, बकरीमेंसे खरबूजा और अन्तमें खरबूजेमेंसे मैं और सारे ग्रामके लोग हाथोंमें लकड़ियां लिये खेलते कूदते निकल आये। राजा यह सब लीला देखकर आश्चर्यान्वित हो रहा। सब लोग राजाको प्रणाम करके अपने २ घर चले गये और मैं वहांसे चलकर यहां उज्जयनीमें आप लोगोंमें आकर मिल गया।

एलापाद—भाई, तुम्हारी कही हुई ये सब बातें मुझे तो अक्षर अक्षर सत्य मालूम होती हैं।

कंडरीक—यदि सत्य हैं, तो बतलाओ कि, एक खरबूजेमें सारा ग्राम कैसे समा गया?

एलापाद—क्या तुमने विष्णुपुराणकी कथा नहीं सुनी है? यदि नहीं सुनी है, तो लो सुनो। पहिले इस जगतमें एक जलको छोड़कर और कुछ नहीं था। पृथ्वी, तेज, वायु, आकाशका अभाव था। उस जलमें एक बड़ा भारी अंडा बहुत समयसे उतराता फिरता था। जलतरंगोंमें क्रीड़ा करते २ एक बार वह फट गया और उसके दो टुकड़े हो गये। उनमेंसे एक टुकड़ा पृथ्वी हो गया जिसमें कि, देव मनुष्य पशु आदि सारे जीव समाये हुए हैं। यदि यह महर्षियोंकी कही हुई बात सच है—एक अंडेमें इतनी बड़ी पृथ्वी समा सकती है, तो खरबूजेमें एक छोटेसे गांवका समा जाना क्या बड़ी बात है?

इसके सिवाय अरण्यपर्वमें मार्कण्डेय ऋषिने युधिष्ठिरसे अपनी एक अनुभव की हुई बात कही है कि, यु-

गके अन्तमें जब सारी पृथ्वी जलमय हो गई थी, तब सम्पूर्ण जगतके साथ मैं भी तरंगोंमें गोते खा रहा था। एक समय मैंने समुद्रमें देखा कि, एक मेरुके समान ऊंचा बड़का झाड़ खड़ा है। बस, उसे देखते ही मैं पानीमेंसे निकला और बड़की शाखापर जा बैठा। अन्य सब मनुष्य देवादिकोंको मैंने समुद्रमें ही छोड़ दिया। बड़पर एक अतिशय स्वरूपवान् बालक बैठा हुआ था। उसे देखकर मैंने कहा—हे वत्स, कहीं ऐसा न हो कि, तू इस गहरे जलमें गिरकर मर जावे, इसलिये ले मेरी भुजाको पकड़ ले, जिसमें गिरनेका डर न रहे। ऐसा कहकर मैंने अपनी एक भुजा उसकी ओर बढ़ाई। परन्तु उस भुजाको पकड़कर बालकने मेरी दयाका यह फल दिया कि, वह मुझे समूचा ही निगल गया। उसके पेटमें पहुंचकर मैंने देखा कि, बड़े २ ऊंचे पर्वत, सघन वन और विशाल पृथ्वी पड़ी हुई है। मैंने घूमना शुरू किया। दिव्य सहस्र वर्षतक मैं बराबर घूमा, परन्तु वहांकी पृथ्वीकी सीमा न मिली। लाचार मैं थककर बाहिर निकल आया। इससे अच्छी तरह सिद्ध होता है कि, जब देव मनुष्यादि सारे जीवोंसहित पृथ्वी एक बालकके पेटमें समा गई, तब खरबूजेके भीतर एक ग्रामका समा जाना असंभव नहीं है।

कंडरीक—खैर, यह तो हमारी समझमें आ गया। परन्तु यह तो कहो कि, एक पक्षीके पेटमें अजगर, उसके पेटमें बकरी, उसके पेटमें खरबूजा और खरबूजेमें सारा ग्राम इस तरह यह परंपरा एक दूसरेमें कैसे समाई होगी?

एलाषाढ़—सुनो, इसका भी समाधान किये देता हूं। श्रीविष्णु भगवान् अर्थात् श्रीकृष्णचन्द्र देवकीके छोटेसे उदरके मध्य भाग (गर्भ) में थे और उनके पेटमें अनेक वन पर्वतादि सहित समस्त पृथ्वी स्थित थी। यह वात पुराणोंमें लिखी हुई है, इसलिये सच है। और जव यह सच है, तव पक्षीके उदरमें अजगर और उसके उदरमें वकरी आदिका रहना कैसे असत्य हो सकता है?

कंडरीक—आपकी यह वात भी मान लेता हूं। पर यह तो कहिये कि, खरवूजेके भीतर मैं और सारे ग्रामके लोग जीते कैसे रहे? और उसमें खेल कूद आदि कैसे करते रहे?

एलाषाढ़—जिस तरह पृथ्वीपर ऋषियोंके वेदाध्ययनादि व्यापार, युद्धादिकके आरंभ, और विवाहादिके उत्सव वरावर होते रहे, तथा उसपर रहनेवाले सवके सव जीते वने रहे, और वह श्रीकृष्णके पेटमे वनी रही, उसी तरह खरवूजेके भीतर सव खेलते कूदते रहे और जीते भी रहे।

कंडरीक—हां, और यह भी तो समझा दो कि, श्रीकृष्णने अपने उदरमें जगतको कैसे रख लिया था, और उनके पेटमें वह समाया कैसे होगा?

एलाषाढ़—सुनो, एक वार ब्रह्मा और विष्णुमें विवाद हो पड़ा। ब्रह्माजी वोले-मेरे मुखसे ब्राह्मण, भुजाओंसे क्षत्रिय, हृदयसे वैश्य और पैरोंसे शूद्र इस तरह चारों वर्ण उत्पन्न हुए हैं, इसलिये मैं ही जगतका कर्त्ता हूं। यह सुनकर कृष्णजी क्रोधित होकर वोले-रे मूर्ख,

तू तो मेरा सेवक है। तुझे ऐसी अहंकारकी वात कहते लज्जा नहीं आती? जिसमें आकाश और भूमि कपोल, पर्वत दाढ़ें, और समुद्र जिह्वा है, उस मेरे मुखमें पैठकरके यदि तू देखेगा, तो तुझे सारा जगत दिखलाई देगा। तू तो मेरे नाभिकमलमेंसे उत्पन्न हुआ है। इसपर भी तू मेरे सामने वढ़ चढ़कर वोलता है? जो कुमुद चन्द्रमाके प्रभावसे विकसित होता है, उसको क्या चन्द्रमाका ही उपहास करना चाहिये?

कंडरीक—इतना वड़ा पक्षी कैसा हो सकता है, जिसके पेटमें सर्पादिक समा जावें? इसकी सिद्धि कैसे हो सकती है?

एलाषाढ़—भाई, क्या तुमने द्रोपदीके स्वयंवरके धनुषकी वात नहीं सुनी है, जिसपर पर्वतादि स्थापन किये गये थे। यदि न सुनी हो, तो लो मैं सुनाता हूं। द्रुपद राजाने घोषणा करा दी कि, "जो पुरुष मेरे देवताधिष्ठित धनुषको चढ़ाकर राधावेध करेगा, उसीको द्रोपदी परणाई जायगी।" इस घोषणाको सुनकर दूर दूरके धनुर्धर राजा आये। वड़े २ वलवान् उस धनुषको न चढ़ा सके। जव शिशुपाल उठे, तव श्रीकृष्णने उस धनुषपर मेरुपर्वत, गरुड़, हलमूसल, सर्प, शंख, चक्र और गदा इतने पदार्थोंका भार रख दिया। परन्तु इससे शिशुपाल विचलित नहीं हुआ। वह धनुषको उठाकर चढ़ाने लगा। यह देख श्रीकृष्णने चन्द्र, सूर्य, अग्नि, समुद्र, पर्वत तथा पृथ्वीका भार भी धनुषपर रख दिया। इतनेपर भी शिशुपालने धनुष चढ़ा दिया, केवल आधे

अंगुलका अन्तर रह गया। उस समय श्रीकृष्णने धनुषको अपने पैरकी एक ऐसी ठोकर लगाई कि, उससे धनुष-सहित शिशुपाल पृथ्वीपर जा पड़ा। इसके पश्चात् उस धनुषको अर्जुनने अपने हाथमें लिया। परन्तु उसका भार पृथ्वीसे नहीं सहन किया गया, इसलिये अर्जुन भीमके हाथोंपर धनुषका भार रखके उसके चढ़ानेके लिये उद्यत हुआ और उसने नीचे देखते हुए धनुषको कानतक चढ़ाके ऐसा वाण मारा कि, मत्स्यभेद हो गया। वस, इसके पश्चात् द्रोपदीने उसके गलेमें वरमाला डाल दी। अव विचार करो कि, जव एक धनुषका इतना वड़ा होना संभव है कि, उसपर चन्द्र सूर्य पृथ्वी आदि लाद दिये गये, तव एक पक्षीके इतने विशाल होनेमें क्या सन्देह हो सकता है कि, उसके पेटमें सर्पादिक समा गये और उसके पैरमें लटककर हाथी ऊपरको खिंचने लगा।

इसके सिवाय ऐसा ही एक दृष्टान्त रामायणमें भी मिलता है। उसके सुननेसे भी तुम्हारा सन्देह दूर हो जायगा। जव रावण सीताका हरण करके जा रहा था, तव जटायु नामका विशाल पक्षी उसके सम्मुख लड़नेके लिये आया। रावणने क्रोधित होकर चन्द्रहास खड्गसे उसके पंखे काट डाले, जिससे वह हतवीर्य होकर पृथ्वी-पर गिर पड़ा। उसकी यह अवस्था देखकर सीताने कहा, हे परोपकारी पक्षी, यद्यपि इस समय तेरे पंख कट गये हैं, परन्तु मैं कहती हूं कि, मेरे शीलव्रतके प्रभावसे तेरे फिर पंख निकल आवेंगे और यह तव होगा, जव तुझे श्रीरामचन्द्रजीके दूतके दर्शन होंगे। ऐसा ही हुआ।

कुछ दिनोंके पीछे रामचन्द्रजीकी आज्ञासे सीताका पता लगानेके लिये भ्रमण करते २ हनुमानजी पंखहीन जटायु पक्षीके पास आये। वे सोचने लगे, यह कोई बड़ा भारी पर्वत पड़ा हुआ है। इसके ऊपर चढ़के देखना चाहिये। इसके ऊपरसे दूर दूरतक की पृथ्वी दिखलाई देगी। जब वे उक्त पर्वतके बिलकुल पास पहुंच गये, तब उन्होंने समझा कि, यह तो पर्वत नहीं, कोई विशाल पक्षी है। इतनेमें जटायुने पूछा तुम कौन हो और कहांसे आये हो? हनुमानने उत्तर दिया, मैं रामचन्द्रजीका दूत हूं और सीताजीका पता लगानेके लिये निकला हूं। जटायु बोला–सीताजीको तो रावण लंका ले गया है, तुम व्यर्थ ही क्यों जंगलोंमें भटकते फिरते हो। अब तुम शीघ्र ही जाकर सीताजीका समाचार रामचन्द्रजीसे कहो। सीताजीकी रक्षाके लिये मैंने बहुत यत्न किया, पर वह सब व्यर्थ गया। रावणने मेरे पंख काट डाले, जिससे मैं तबसे इस पृथ्वीपर पड़ा हूं। यह सुनकर हनुमानजीने कहा,—तुमने रावणके साथ युद्ध किया और मुझे सीताका पता बतलाया, इससे मैं आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारा कल्याण हो। बस, इतना कहने की देर थी कि, जटायुके गये हुए पंख फिर निकल आये और वह आकाश मार्गसे उड़कर स्वर्ग चला गया। अब सोचो कि, जब जटायु पक्षी पर्वत सरीखा था, तो ढीक पक्षी के विशाल होनेमें क्या आश्चर्य हो सकता है?

इति द्वितीयाख्यान।

तृतीयाख्यान।

तदनन्तर कंडरीक बोला—हे एलाषाढ़, अब तुम अपनी कोई अनुभवी, देखी, अथवा सुनी हुई बात सुनाओ।

एलाषाढ़—जब मैं जवान था, तब धन प्राप्त करनेकी आशासे पर्वतों गुफाओं और निर्जन स्थानोंमें घूमा करता था, और नानाप्रकारके मंत्र तंत्रादि सिद्ध किया करता था। एक बार मुझे पता लगा कि, यहांसे हजार योजन पूर्वकी ओर एक बड़ा भारी पर्वत है और उसमें एक सहस्रवेधी रसका कुंड है, जो एक योजन लम्बी चौड़ी शिलासे ढँका हुआ है। यह सुननेकी देर थी कि, मैंने पूर्वकी ओर चलना शुरू कर दिया। और एक एक डगमें सौ २ योजन दूरीको लांघता हुआ मैं उक्त पर्वतपर जा पहुंचा। देखा, वहां सचमुच ही रसका कुंड था। शिलाको उठाकर मैंने एक ओर रख दी और उक्त स्वर्ण कुंडमेंसे इच्छित रस लेकर तथा शिलाको फिर ज्योंकी त्यों कुंडके मुंहपर ढँककर मैं वहांसे चल दिया और घर आ पहुंचा। अब मुझे किस बातकी कमी थी? उस रसके संयोगसे मैंने सोना बनाना शुरू किया और इतना बना डाला कि, उसके कारण मैं कुबेरके समान धनवान हो गया। इस धनसे मैं नानाप्रकारके भोग भोगता, याचकोंको दान देता और बन्धुजनोंको सुखी करता हुआ

रहने लगा। एक दिनकी वात है कि,—मैं अपने शयनागारमें आरामसे सो रहा था कि, आधीरातके समय पांच सौ चोरोंने आकर मेरे घरको लूटना शुरू कर दिया। मेरे जीते हुए मेरे धनको चोर ले जावें? यह वात मुझसे न सही गई और मैं साहसपूर्वक चोरोंपर टूट पड़ा। मेरे एक २ वाणसे दश २ चोर जमीनपर पड़ने लगे। इधर मार २ का शब्द सुनकर नौकर चाकर लोग भी इकट्ठे होने लगे। चोरोंने देखा कि, अव हमारा निस्तार नहीं है, इस लिये वे सवके सव एकत्र होकर मेरे ऊपर एक साथ टूट पड़े और उनमेंसे एकने मेरे सिरको धड़से अलग करके बेरीके झाड़से वांध दिया और धड़के टुकड़े २ कर डाले। इसके पश्चात् चोर मेरे घरको लूट लाट कर चल दिये। अव मेरे सिरकी दशा सुनिये। वेर खूव पक रहे थे और मुझे भूख भी खूव लगी थी, इससे मैंने उक्त वृक्षके पेट भर वेर खाये। इतनेमें सवेरा हो गया। जव लोगोंने देखा कि, मेरा मस्तक वेर खा रहा है, तव उन्होंने जीवित समझके उसे खोला और दूसरे सव अंगोपांगोंको एकत्र करके उनपर उसे जमा दिया। वस, एकत्र करनेकी देर थी कि, मैं पहिले जैसा रूप लावण्ययुक्त होकर जीवित हो गया। यह मेरी प्रत्यक्ष अनुभव की हुई घटना है। यदि इसपर तुम्हें विश्वास न हो, तो सव धूर्तोंको भोजन कराओ और यदि श्रद्धान हो–इसे सच मानते हो, तो अपने प्राचीन ग्रन्थोंके प्रमाण दो।

शंस—एलाषाढ़, तुमने जो कुछ कहा, अक्षरशः सत्य

है। उसमें किसी प्रकारका भी सन्देह नहीं होता है। पुराण, स्मृति, भारतादि ग्रन्थोंमें इस प्रकारकी सैकड़ों घटनाओंका वर्णन है।

एलाषाढ़—अच्छा तो, पहिले यह बतलाओ कि, मेरा निर्जीव मस्तक सजीव कैसे हो गया?

शंस—लो सुनो, पूर्वकालमें एक यमदग्नि नामका ऋषि हो गया है। उसकी स्त्रीका नाम रेणुका था। रेणुकाके शील और सतीत्वके प्रभावसे कुसुमित वृक्ष नम्र हो जाते थे। एक वार एक राजा यमदग्निके आश्रमके पास होकर निकला और रेणुकाको देखकर उसपर ऐसा आसक्त हो गया कि, रेणुकाके विना वह अपने जीवनको व्यर्थ समझने लगा। इसके कुछ काल पीछे एक दिन यमदग्निने देखा कि, रेणुकाके दर्शनसे कुसुमित वृक्ष नम्र नहीं होते हैं। इससे उसे विश्वास हो गया कि, रेणुकाका शील भंग हो गया और इस कारण उसने अपने पुत्र परशुरामको आज्ञा दी कि, तू अपनी पापिनी माताका मस्तक काट डाल। पुत्रने पिताकी आज्ञाका पालन किया। रेणुकाका कटा हुआ सिर पृथ्वीपर तड़फने लगा। यमदग्निको पुत्रके आज्ञापालनसे वहुत संतोष हुआ, इसलिये उसने कहा,—वत्स, मैं तुझपर वहुत प्रसन्न हूं। इस समय तू जो वर मांगेगा, मैं देनेके लिये तयार हूं। परशुरामने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि—पिताजी, यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो कृपाकरके मेरी माताको सजीव कर दीजिये। यमदग्निने कहा—तथास्तु। वस, इतना कहते ही रेणुकाका

सिर धड़से जुड़कर जीवित हो गया। अव तुम सोच लो— कि, जव यह वात सत्य है, तव तुम्हारे निर्जीव मस्तकका जीवित हो जाना कैसे असत्य हो सकता है?

और क्या तुमने यह नहीं सुना है कि, श्रीकृष्णचन्द्रके साथ युद्ध करते समय जरासंध राजाके शरीरके दो भाग हो गये थे और फिर वे दोनों ही भाग परस्पर मिलकर युद्ध करने लगे थे। यदि यह सत्य है—शरीरके दो जुदे हुए भागोंका मिलना ठीक है, तो फिर तुम्हारे मस्तक और धड़का मिलकर जीवित होना कौन वड़े आश्चर्यकी वात है?

इसी विषयका एक और दृष्टान्त मिलता है, उसको भी सुन लो। जव सुन्द और निसुन्द नामके दो दैत्य सहोदर सर्व लोगोंका क्षय करनेके लिये यमराजके समान उद्यत हुए, तव समस्त देवोंने उनका वध करनेके लिये अपने २ शरीरोंका एक एक तिलके वरावर अंश लेकर एकत्र किया और उस विलक्षण संयोगसे एक तिलोत्तमा नामकी अप्सरा उत्पन्न की। तिलोत्तमाने उत्पन्न होते ही प्रार्थना की कि, मुझे क्या आज्ञा है? मैं उसका पालन करनेके लिये तयार हूं। देवोंने कहा कि,—जैसे वने तैसे सुन्द और निसुन्दका नाश करके हमको प्रसन्न करो। तिलोत्तमा दैत्योंके पास जाकर उन्हें अपने हावभाव विभ्रमविलासयुक्त नृत्यसे मुग्ध करने लगी। निदान वे इस अप्सरापर मुग्ध होकर ऐसे विषयान्ध हुए कि, एक दूसरेसे मत्सरताके कारण लड़ने लगे और उसी लड़ाईमें

दोनों ही यमलोकको सिधार गये। इसीलिये कहा है किः—

स्त्रीणां कृते भ्रातृयुगस्य भेदः
सम्बन्धभेदे स्त्रिय एव मूलम् ।
अप्राप्तकामा बहवो नरेन्द्रा
नारीभिरुच्छेदितराजवंशाः ॥

अर्थात्—स्त्रियोंके लिये भाई भाईयोंमें भी भेद हो जाता है। क्योंकि सम्बन्ध भेदमें स्त्रियां ही मूल कारण हैं। ऐसे सैकड़ों राजा हो गये हैं, जो मनचाही स्त्रियोंके प्राप्त न होने कारण लड़े और इसीमें जिनके राजवंश नष्ट हो गये।

अव तुम यह सोचो कि, जब देवोंके तिल तिल भर अंशसे तिलोत्तमा वन गई, तव तुम्हारे खंड खंड अंगोंका जुड़कर सजीव हो जाना क्या वड़ी वात है?

इसके सिवाय मैं एक दृष्टान्त और भी देता हूं, उससे तुम्हारे सन्देहकी निवृत्ति हो जायगी। एक वार वाल्याव-स्थामें पवनके पुत्र हनुमानने अपनी माता अंजनीसे पूछा कि,– हे माता, यदि मुझे भूख लगै, तो मैं क्या खाया करूं? अंजनीने कहा—बेटा, लाल वनफल खाया करो। इसके कुछ दिन पीछे एक वार हनुमानने उदय होते हुए सूर्यको देखकर समझा कि, यह भी कोई लाल वनफल है, और इसलिये उन्होंने उसे खानेके लिये पकड़ना चाहा। इससे सूर्यदेवको वड़ा क्रोध आया। उन्होंने हनु-मानको करप्रहारसे चूर्ण विचूर्ण कर दिया। यह देख, अंजनी विलाप करने लगी। पवनको भी अपने पुत्र वि-

योगसे वड़ा दुःख हुआ। वह सूर्यसे कुपित हो गया और पाताल लोकमें प्रवेश कर गया। पवनके विना सम्पूर्ण जगद्वासी और देव आकुल व्याकुल होने लगे और पटापट मरने लगे। इससे देवोंको वड़ी चिन्ता हुई। वे सवके सब पातालमें गये और पवनको यह कहकर मना लाये कि, हम तुम्हारे पुत्रको जीवित कर देंगे। यहां आकर देवोंने हनुमानके चूर्ण विचूर्ण हुए अंशोंको एकत्र करके जिला दिया। एकत्र करते समय शरीरका एक अंश खोजनेपर नहीं मिला, इसलिये हनुमान एक हनु वा अंश-रहित रह गया। वह मरकरके जी गया था, इसीसे उसका नाम हनुमान कहलाया। (हनु शब्दका अर्थ मृत्यु है) अव यदि पवनका चूर्ण विचूर्ण हुआ पुत्र सजीव हो गया, तो तुम्हारे सजीव होनेमें कैसे सन्देह हो सकता है?

इतनेपर भी यदि तुम्हारी शंका नष्ट नहीं होती है, तो एक दृष्टान्त और कहता हूं, उसे भी सुन लो। राम और रावणके अतुल संग्राममें जव रावणके सुभटोंके अस्त्र शस्त्रोंसे अनेक वानरोंका अंगच्छेद हो गया और रावणने लक्ष्मणको शक्तिप्रहारसे पृथ्वीपर सुला दिया, तव श्रीरामचन्द्रजी शोकातुर होकर विलाप करने लगे। उस समय हनुमानने द्रोणपर्वतयुक्त विशल्या औषधि लाकर लक्ष्मणके लगा हुआ शक्तिवाण दूर किया और वानरोंको भी जीवित कर दिया। सो जव इस पौराणिक कथाके अनुसार छेदाङ्ग वन्दरोंका जीना सत्य है, तो तुम्हारा जीना असत्य कैसे हो सकता है?

इसके सिवाय क्या तुमने स्कन्धकी उत्पत्ति नहीं सुनी है। एक वार महादेव हिमालय पर्वतकी गुफामें पार्वतीके साथ संभोगक्रीड़ामें आसक्त थे। उस समय एक तारक नामका राक्षस स्वर्गमें वड़ा उपद्रव मचा रहा था और देवोंको वड़ा कष्ट दे रहा था। देवता जानते थे कि, महादेवके वीर्यसे उत्पन्न हुई सन्तानके विना अन्य किसीकी भी शक्ति नहीं है, जो तारकको मारे, परन्तु वेचारे क्या करें, महादेव संभोगसे विरक्त ही नहीं होते थे। उन्हें इसी तरह संभोग करते हुए दिव्य सहस्र वर्ष वीत गये। निदान देवोंने सोचा कि, किसीको महादेवजीके पास भेजना चाहिये और इसके लिये उन्होंने अग्निदेवको चुना। अग्निसे सव देवोंने प्रार्थना की कि, आप वड़े भारी उपकारी हैं। इस समय आप हम सवपर उपकार करनेकी कृपा करें। इस समय सव देव शोकसागरमें निमग्न हो रहे हैं। अनर्थकारी तारकने सवकी नाकों दमकर रक्खी है। इस समय आपके विना हमारी कोई रक्षा नहीं कर सकता है। यदि आप गुफामें जाकर ईश्वर (महादेव) को दिखलाई दो, तो शायद वे संभोगक्रीडा त्याग दें और हमारा काम वन जाय। यह सुनकर अग्निदेवने कहा—देवगणो, आप जानते हैं कि, खट्वांगधारी, शूलपाणि, नर-कपालधारी, स्मशानवासी ईश्वरके पास जव अन्य अवस्थाओंमें भी जानेमें भय लगता है, तव यह तो संभोगावस्था है। इस समय अपनी दुर्दशा करानेके लिये उनके पास कौन जाय? जव वे अनेक जनोंके देखते हुए लिङ्गोत्तालन करके नृत्य करते हैं, तव इन्द्र जैसे

शक्तिशालियोंको भी भय लगता है, फिर मैं तो किस गिनतीमें हूं? यदि ईश्वर कुपित हो जायगा, तो मेरी क्या दशा होगी? मैं प्रार्थना करता हूं कि, आप मुझे इस संकटमें न डालें। यह सुनकर इन्द्रने कहा—तुम ईश्वरसे किसी भी वातका भय मत करो। क्योंकि वे इस समय पार्वतीके वशीभूत हैं। वड़े २ अदम्य पुरुषोंको स्त्री दमित कर देती है। यदि पार्वती इस समय उनसे अकार्य भी करनेको कहेगी, तो वे कभी आनाकानी नहीं करेंगे। सचमुच ही वे पार्वतीसे डरते हैं। क्या तुमने उन्हें गौरीसे कभी भयभीत होते नहीं देखा है? तुम निःशंक होकर ईश्वरके पास जाओ। यदि वे तुमपर रुष्ट भी होंगे, तो पार्वतीका मन रखनेके लिये होंगे। तुमपर कुछ उपद्रव नहीं करेंगे। इन्द्रके इस तरह समझानेसे अग्निदेव हिमालयकी गुफामें गये। उन्होंने देखा कि, ईश्वर संभोगासक्त हो रहे हैं। ईश्वरने इस आगन्तुकको आया देख अपने भोगका अन्तराय समझा, इस लिये वे कुपित होकर मारनेको दोड़े। जव पार्वतीने रोका, तो उन्होंने कुछ शान्त होकर पूछा,—तू कौन है? अग्निने कहा—मैं एक भिक्षुक ब्राह्मण हूं और भिक्षा मांगने आया हूं। ईश्वरने कहा—तू मेरे वीर्यका पान कर और अपना वीर्य अग्निको प्राशन करनेके लिये दिया। उसे पान करते ही अग्नि उसकी असह्य उष्णतासे तड़फड़ाने लगा। वेचारा वहांसे भागा और अतिशय कष्टके कारण उसने समुद्रमें जाकर उसका वमन कर दिया। उसी दिनसे संसारमें यह वात प्रसिद्ध हुई कि, समुद्रमें जितने रत्न मिलते हैं,

वे सव ईश्वरके वीर्यसे उत्पन्न हुए हैं । वमन कर देनेपर भी अग्निके पेटमें वीर्यका कुछ अंश शेष रह गया, इसलिये उसने फिर उसे पद्म सरोवरमें जाकर वमन किया। उस समय सरोवरमें कृत्तिका नामकी अप्सराएँ स्नान कर रही थीं, सो दैवात् वह वीर्य उनके गर्भाशयोंमें प्रवेश कर गया और इससे उन्हें गर्भ रह गया। कालान्तरमें उन छह अप्सराओंने मस्तक, वाहु, हृदय, पीठ, शरीर और चरण ये छह अंग प्रसव किये । इससे उन्हें वड़ा आश्चर्य हुआ और इससे भी अधिक आश्चर्य उन्हें तव हुआ, जव उन छहों अंगोंके यथास्थान मिलानेसे वे पारेके सदृश मिल गये और एक सांगोपांग वालक वन गया। यह वालक स्कन्ध वा स्वामिकार्त्तिकेय था। इसने युद्ध करके तारक दैत्यको परास्त किया और इस तरह अग्निके प्रयत्नसे देवोंका संकट दूर हो गया । अव जव कि इस वातमें सन्देह नहीं है कि, जुदे २ गर्भोंमें उत्पन्न हुए छह अंग मिलकर सजीव स्कन्धकुमार वन गया, तव तुम्हारे मस्तकके और अंगोंके मिलनेमें क्यों सन्देह होगा?

ग़लापाढ़—खैर भाई, तुम्हारे इन छह दृष्टान्तोंसे मेरे कटे मस्तकका जुड़ जाना तो सिद्ध हो गया, पर अव यह तो किसी शास्त्रकी साखसे समझा दो कि, मेरे कटे सिरने वेर कैसे खाये होंगे?

शंस—लो, इसका भी प्रमाण सुन लो । श्रीविष्णुभगवानने अपने चक्रसे राहुका मस्तक काट डाला था। तवसे अव तक उसके दोनों भाग आकाशमें भ्रमण करते

रहते हैं, और सूर्य तथा चन्द्रमाको ग्रसा करते हैं। जव यह सत्य है, तो तुम्हारे मस्तकका वेर खाना भी सत्य है।

एलाषाढ़—और मैंने एक एक डगमें सौ २ योजनका मार्ग कैसे लांघा होगा?

शंस—विष्णु भगवानको जव यज्ञमें वलि राजाने तीन डग पृथ्वी देना स्वीकार की थी, तव विष्णुने अपनी तीन ही डगोंमें पर्वतादि सहित समस्त पृथ्वीका अतिक्रमण किया था। यदि यह सत्य है, तो तुम्हारा एक २ डगमें सौ २ योजन भूमिका लांघना भी असत्य नहीं हो सकता।

एलाषाढ़—अच्छा, अव यह और वताओ कि, मैंने इतनी वड़ी एक योजनकी शिलाको उठाकर रसकुंडसे अलग कैसे की होगी? यह कैसे संभव हो सकता है?

शंस—राम रावण युद्धमें जिस समय लक्ष्मणको शक्ति लगी थी, उस समय हनुमानजी उनके लिये विशल्या औषधि लेनेको गये थे और उक्त विशल्या औषधिसहित द्रोण पर्वतको उठा लाये थे। शास्त्रके प्रमाणसे जव यह वात सत्य है। अर्थात् अकेले हनुमान जव अनेक शिलाओंसहित पर्वतको उठा लाये थे, तव तुम्हारा एक शिलाका उठाना कौन वड़ी वात है? और यह भी लिखा है कि, एक वार विष्णुने वाराहरूप धारण करके पृथ्वीको अपनी एक दाढ़पर उठाके रख लिया था। यह सत्य है, तो तुम्हारा एक योजनकी शिला उठाना भी सत्य है।

इति तृतीयाख्यान।
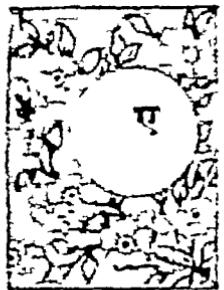
चतुर्थाख्यान।

लाषाढ़—मित्र शंस, अब तुमने जो कुछ देखा, सुना, अनुभव किया हो, उसे सुनाओ।

शंस—एक गांवसे कुछ दूर एक पर्वतकी तराईमें एक खेत था। एक बार मैं शरदृऋतुमें उक्त खेतमें गया था। मैंने एकाएक देखा कि, एक मदोन्मत्त हाथी पर्वतसे नीचे उतरकर मेरी ओरको झपटा हुआ चला आ रहा है। मुझे आत्मरक्षाकी चिन्ता हुई, इसलिये मैं भागा और ऐसा स्थान ढूंढ़ने लगा, जहां हाथीसे बच जाऊं। निदान मुझे उसी खेतमें एक बड़ा भारी तिलका वृक्ष देख पड़ा। मैं चटसे उसपर चढ़ गया और देखने लगा कि, हाथी अब क्या करता है। हाथी भी आ पहुंचा। उसने क्रोधित होकर तिलके झाड़को खूब जोरसे हिलाया। उसके हिलानेसे मैं तो नहीं गिरा, परन्तु तिलके अगणित दाने नीचे झड़कर पड़ गये। वे दाने जब हाथीके पैरोंसे बारंबार कुचले गये, तो उनमें तेल निकलने लगा और वह इतना निकला कि, तेलकी धार वह निकली और उसके मारे वहां कीचड़ ही कीचड़ हो गई। वह कीचड़ भी इतनी हुई कि, उसमें हाथी निमग्न हो गया और वह बेचारा भूख प्यासके कारण चिंघाड़ें मारता हुआ वहींपर मर गया। यह देखकर मैं झाड़से नीचे उतरा और मैंने

हाथीका चमड़ा निकालकर उसका एक वड़ा भारी कुप्पा वनाया। इसके वाद मैंने तेलको एकट्ठा करके उसमेंसे दश घड़े तेल पीकर तथा एक मन खली खाकर अपनी भूख प्यास शान्त की और फिर कुप्पा भरकर उसे कंधे पर रखकर घरकी राह ली। जव ग्रामके विलकुल ही पास पहुंच गया, तव वहांपर जो एक वड़ा भारी झाड़ था, उसकी एक शाखापर कुप्पा लटकाकर मैं अपने घर आ गया। घरपर लड़के खेल रहे थे। उनसे मैंने कहा कि, अमुक झाड़की डालीपर एक कुप्पा टांग आया हूं, उसे तुम ले आओ। लड़के दौड़े हुए गये, परन्तु उन्हें उक्त झाड़पर कुप्पा नहीं दिखलाई दिया। तव वे उस वड़े भारी झाड़को ही जड़सहित उखाड़कर घर ले आये। यह वात मेरी स्वतः अनुभव की हुई है और इसको वहुत दिन भी नहीं हुए है। मैं उक्त घटनाके वाद ही घरसे चलकर यहां तुम सवसे आकर मिला हूं।

खंडवणा—भाई, तुमने जो कुछ कहा है, उसमें तो मुझे किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं होता है। क्योंकि तुम्हारी कही हुई सव वातें भारतादि ग्रन्थोंसे मिलती हैं।

शंस—श्रीमतीजी, यदि मेरी कही हुई घटना सत्य है, तो वतलाइये कि, तिलका वृक्ष इतना वड़ा कैसे संभव हो सकता है कि, उसके तिलोंके कुचले जानेसे तेलकी नदी वह निकले। और यह भी शास्त्रसे सिद्ध कर दीजिये कि, मैं दश घड़े तेल कैसे पी गया और मनभर खली कैसे खा गया?

खंडवणा—भारतमें कहा है कि, हाथियोंके मस्तकसे इतना मद झरा कि, उसकी नदियां वह गईं और उसमें गज, रथ, घोड़े और पैदल डूबने लगे। सो जब हाथीके मदजलसे ही नदियोंका वह निकलना संभव है, तब तिलके तेलसे नदी वहना कैसे असंभव हो सकता है? और जिस समय भीमने बक राक्षसको मारा था, उस समय उसके खानेके लिये एक भैंसा, सोलह खंडी अन्न, और एक हजार घड़े शराबके लाये गये थे। यदि यह सत्य है, तो तुम्हारा दश घड़ा तेल पीना और एक मन खली खाना भी सत्य है। इसके सिवाय जब कुंभकर्ण सो करके उठता था, तब शराबके एक हजार घड़े पान करता था और बहुतसे मनुष्य तथा पशुओंका भक्षण करता था। फिर तुम्हारा दश घड़ा तेल पीना और मनभर खली खाना तो एक मामूली बात है। शास्त्रोंमें यह भी लिखा है कि, अगस्त ऋषिने एक वार सारे समुद्रोंका जल पी लिया था तथा गंगा स्वर्गसे उतरकर महादेवके जटाजूटमें वहती हुई जह्नु ऋषिके आश्रममें जिस समय पहुंची, उस समय उन्होंने उसे पी ली और एक हजार वर्षतक अपने उदरमें ही रक्खी। इसीसे गंगा जाह्नवी कहलाती है। इन कथाओंके सामने तुम्हारी दश घड़ा तेल पीनेकी बात तो बहुत ही अगण्य है।

शंस—और मैंने उतने वड़े हाथीके चमड़ेका तेलसे भरा हुआ कुप्पा कैसे उठाया होगा? और फिर उसे उठाकर ग्रामतक कैसे पहुंचाया होगा?

खंडवणा—भाई शंस मालूम होता है कि, तुमने गरुड़पुराण नहीं सुना है, इसीलिये ऐसी छोटी २ सी बातोंमें शंका करते हो। लो सुनो, उक्त ग्रन्थमें लिखा है कि,—कश्यप ऋषिकी कद्रू और विनता नामकी दो स्त्रियां थीं। इन दोनोंने एक वार क्रीड़ा करते समय शर्त की कि, हम दोनोंमेंसे क्रीड़ा करनेमें जो हारेगी, वह दूसरीकी दासी होकर रहेगी। विनता हार गई और कद्रू जीती, इसलिये शर्तके अनुसार विनता कद्रुकी दासी होकर रहने लगी। कद्रुको अच्छा मौका मिला। सौत होनेके कारण उसने विनताको वहुत कष्ट देना आरंभ किया। कुछ समयके पीछे विनता गर्भवती हुई और दिन पूरे होनेपर उसने तीन अंडे उत्पन्न किये। अपने दासीपनके कष्टको टालनेकी उसको इतनी उतावली थी कि, उसने एक अंडेको तत्काल ही भेद दिया। उसे आशा थी कि, इसमेंसे मेरे दुःखका हरण करनेवाला पुत्र होगा। परन्तु देखती है, तो उसमेंसे एक विच्छू निकला। इसके कुछ दिनों पीछे, उसने दूसरे अंडेका छेदन किया, तो उसमेंसे एक ऐसा पुत्र निकला, जिसके कि, जंघाएँ नहीं थीं। इस पुत्रने कहा—हे माता, तुमने पहिला अंडा कच्ची ही अवस्थामें भेद दिया और यह दूसरा भी अच्छी तरहसे पक नहीं पाया था, इस कारण मैं अधूरा हुआ और इससे मुझमें इतनी शक्ति नहीं है कि, तुम्हारे दासीपनके दुःखको दूर कर सकूं। अव इस तीसरे अंडेको तुम अच्छी तरहसे पालना। इससे तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।

तदनन्तर कुछ समयमें तीसरा अंडा अपने स्वभावसे ही फूटा और उसमेंसे सर्पकुलका काल महावलवान् गरुड़ पक्षी उत्पन्न हुआ। यह प्रवल पक्षी कद्रुके वेटे सर्पोंको वहुत कष्ट देने लगा। सर्पोंने एकत्र होकर अपनी माताके आगे रोकर गरुड़की शिकायत की। कद्रुको इससे क्रोध आया। उसने विनताको डपटकर कहा—री दासी, तू अपने गरुड़को क्यों नहीं रोकती है, जो मेरे वेटोंको कष्ट देता है। यदि अव भी नहीं रोकेगी, तो स्मरण रखना वहुत दुःख उठायगी। यह सुनकर विनता रोने लगी। गरुड़ने घर आकर पूछा-माता, तू क्यों रोती है? माताने अपने दासीपनका सारा वृत्तान्त सुनाकर कहा-वेटा, तेरे अन्धे पिता वदरिकाश्रममें रहते हैं। उन्हें अमृतका स्थान मालूम है। यदि तू उनसे अमृतका स्थान पूछकर वहांसे अमृत ले आवे, तो मेरी दासीपनसे मुक्ति हो जावे। यह सुनकर गरुड़ पिताके पास जाकर उनके पैरों पड़ा। पिताने शरीर-स्पर्श करके इसको पहिचाना। कुछ समयके पीछे गरुड़ने कहा-पिता, मुझे भूख लगी है, वतलाइये क्या खाऊं? कश्यप ऋषिने कहा-यहांसे थोड़ीसी दूरपर पद्मा नामका सरोवर है। वहां एक वारह योजन शरीरवाला हाथी है और इतना ही वड़ा एक कछुआ है। वे दोनों इस समय आपसमें लड़ रहे हैं, सो तू जाकर जव वे मर जावें, तव उन्हें खा जाना-भूखा नहीं रहना। गरुड़ने ऐसा ही किया। वह उन दोनोंका भक्षण करके जव लौट रहा था, तव मार्गमें एक वड़ा भारी

वड़का वृक्ष दिखलाई दिया, जिसके ऊपर अनेक पक्षियोंका निवास था और नीचे ब्रह्माके वीर्यसे उत्पन्न हुए वालिखिल्य आदि साढ़े तीन करोड़ ऋषि तपस्या करते थे। गरुड़ विश्राम करनेके लिये उस वृक्षपर जा बैठा। उसके बैठनेकी देरी थी कि, वजनके मारे वृक्ष चरचरा कर गिरने लगा। यह देख गरुड़को चिन्ता हुई कि, कहीं इसके नीचे ये ऋषि न दब जावें। इसलिये वह सारेके सारे वृक्षको चोंचसे दबाकर और जड़से उखाड़कर देवदानवोंको आश्चर्ययुक्त करता हुआ ले उड़ा! उड़ता २ वह समुद्रके एक द्वीपमें गया और वहां उसने उस वड़को छोड़ दिया। उक्त वटवृक्षसे अलंकृत भूमिको लोग लंका कहने लगे और पीछे यही लंका रावणकी राजधानी हुई। तदनन्तर गरुड़ वहांसे उड़कर अपने पिताके पास आया और उनसे फिर पूछने लगा कि—अब मुझे फिर भूख लगी है, बतलाइये, क्या खाऊं? ऋषिमहाराजने कहा—सारे राक्षसोंको खाजा! गरुड़ आज्ञानुसार सब राक्षसोंका भक्षण कर गया। इसके पीछे उसने पूछा कि, अब मुझे यह बतला दीजिये कि, अमृतका स्थान कहां है? पिताने कहा—हे वत्स, अमृतका कुंड पातालके नीचे एक अतिशय दुर्गम स्थानमें है। क्योंकि उसके चारों ओर धक धक करती हुई आग जला करती है और सारे सुर असुर उसकी रखवाली करते हैं। वहांसे अमृतका ले आना एक प्रकारसे अशक्य है। हां, यदि कोई अग्निदेवको बहुतसा मधु घृत तथा जल देकर सन्तुष्ट कर ले, तो वह कुंडके

समीप जा सकता है और उसमेंसे अमृत ले सकता है। परन्तु अमृत पाकर भी उसके लानेमें कुछ थोड़ी विघ्न वाधाएँ उपस्थित नहीं होती हैं। ऋषिके वचन सुनकर गरुड़ अपने दोनों पंखोंमें मधु घृत तथा जल धारण करके पाताल लोकको गया और वहां अग्निको संतोषित करके और उसके बतलाये हुए अमृत कुंडमेंसे अमृत ले करके लौटने लगा। इतनेमें कुंडके रक्षक देवोंने शोर मचाया कि, कोई पक्षी अमृत लिये जाता है! यह सुनते ही सारे देव दानव क्षुभित हुए और मुद्गर, मूसल, शक्ति, हल, खड्ग दंडादि शस्त्र लेकर उसके पीछे मारो! मारो! जाने न पावे! इस प्रकार पुकार करते हुए दौड़े तथा गरुड़से बोले,—रे पापी, चोर, तू अमृत चुराकर कहां जाता है? तेरे पापका फल तुझे अभी दिया जाता है। यह सुनकर गरुड़ देवोंपर टूट पड़ा और उन्हें अपनी चोंच तथा पंखोंके प्रहारसे यमलोकको पहुंचाने लगा। देव दानव डरकर भागने लगे, तब इन्द्रने क्रोधित होकर अपना जाज्वल्यमान वज्र गरुड़पर चलाया। परन्तु वह भी निष्फल हुआ। गरुड़ने यह बतलानेके लिये कि इसकी चोट मुझे बिलकुल नहीं लगी है, उसे अपनी चोंचमें दबा लिया। यह देखकर इन्द्रको बड़ा भय लगा। उसने विष्णुके पास जाकर इस विपत्तिका हाल सुनाया। सुनकर विष्णु भगवान् भी अतिशय कुपित हुए और अपने बारह सूर्योंके बराबर तेजस्वी सुदर्शन चक्रको लेकर गरुड़के पीछे दौड़े। यह देखकर शनैश्चरादि ग्रहोंने तथा

सम्पूर्ण ऋपियोंने विष्णुसे प्रार्थना की कि—हे स्वामी, आप सर्वव्यापी हैं। समस्त लोकके नाथ हैं। आपको विचार किये विना किसीपर कोप नहीं करना चाहिये। यह गरुड़ आपका वन्धु है, इसलिये आप क्रोध छोड़ दें और म्लेच्छोंके समान अपने गोत्रका क्षय न करें। यह सुनकर विष्णु भगवान शान्त हो गये और गरुड़के साथ प्रसन्नतापूर्वक मिले। निदान गरुड़ अमृत लेकर अपनी माताके पास गया और उससे उसने माताका कष्ट निवारण किया। अव यह विचार करो कि, जव गरुड़ पक्षीने एक स्थानसे वड़ा भारी वृक्ष उखाड़कर दूर द्वीपान्तरमें जा पटका, तव तुम एक कुप्पा उठाकर ग्रामतक ले आये, इसमें क्या शंका हो सकती है?

इसके सिवाय यह वात जगद्विख्यात है कि, श्रीकृष्णजी गोवर्धन पर्वतको उखाड़कर सात दिनतक उंगलीपर रक्खे रहे थे। फिर तुम तेलसे भरे कुप्पेको उठा ले गये, तो क्या आश्चर्य हुआ?

समुद्रका पुल वाँधते समय जव वन्दर भी दूर दूरसे वृक्ष उखाड़कर लाते थे, तव तुम्हारे लड़के यदि एक झाड़को उखाड़ लाये, तो कुछ अचरज करनेकी वात नहीं है।

रामायणमें यह भी कहा है कि, हनुमान नामक वन्दरने अनेक अशोक वृक्ष उखाड़कर फेंक दिये थे। सो यदि ये वातें सत्य हैं, तो तुम्हारी वातोंमें सन्देह करनेको जगह नहीं मिल सकती।

इति चतुर्थाख्यान।

पञ्चमाख्यान।

शांस—श्रीमती खंडवणाजी, अव आपने जो कुछ देखा, सुना, अनुभव किया हो, उसे और सुना दीजिये।

खंडवणा—सुना तो दूंगी, परन्तु भोजन तुम्हें तव ही दूंगी, जव सवके सव मिलकर मेरे चरणोंपर मस्तक रक्खोगे।

शांस—न कुछ भोजनके लिये हम वड़े वड़े माननीय पुरुष दीन होकर तुम्हारे चरणोंपर पड़ेंगे? ऐसा कभी नहीं होगा।

खंडवणा—(मुसकुराके) खैर, अव इस झगड़ेको जाने दो, पहिले मेरी अनुभव की हुई कथा सुन लो। मैं जव युवती थी, तव रूप लावण्यकी निधान थी। एक वार जव मैं चतुर्थ स्नान करके शयनागारमें शयन करती थी, तव पवन मेरा सौन्दर्य देखकर मोहित हो गया और मुझसे रतिक्रीड़ा करने लगा। मुझे गर्भ रह गया। दिन पूर्ण होनेपर मैंने एक पुत्रको जन्म दिया। परन्तु वह पुत्र ऐसा हुआ कि, जन्मते ही मुझसे वार्तालाप करके कहीं अन्यत्र चला गया। यह मेरी अनुभव की हुई घटना है। यदि तुम उसे असत्य समझते हो, तो भोजन दो, नहीं तो शास्त्रकी साक्षी देकर इसे सत्य सिद्ध करो।

मूलदेव—शास्त्रोंमे लिखा है कि,–पवनने जव कुन्तीके साथ संभोग किया था, तव भीम नामक वली पुत्र उत्पन्न हुआ था और जव अंजनीके साथ संभोग किया था, तव हनुमान हुआ था। यदि उक्त कथन सत्य है, तो पवनके संयोगसे तुम पुत्रवती हुई, यह कैसे असत्य हो सकता है?

खंडवणा—पुत्र उत्पन्न होना तो शास्त्रसे सिद्ध हो गया। परन्तु वह जन्मते ही वार्तालाप कैसे करने लगा और उसी समय चल कैसे दिया?

मूलदेव—पाराशर ऋषिने एक धीवरकी लड़कीके साथ जिसका कि नाम योजनगंधा था संभोग किया और उससे व्यास नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। व्यासजी जन्मते ही अपनी मातासे यह कहकर कि, 'माता, मुझे स्मरण रखना' वनको चले गये। इसके पश्चात् ऋषिके प्रभावसे योजनगंधा अक्षतयोनि हो गई और उसे शान्तनु नामक राजाने भोगी, जिससे विचित्रवीर्य नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। विचित्रवीर्य जव युवा हुआ, तव उसका व्याह हुआ, परन्तु इसके कुछ ही समय पीछे वह पुत्रहीन अवस्थामें ही मर गया। योजनगंधाने देखा कि, विचित्रवीर्यका वंशच्छेद हो जायगा, क्योंकि उसके कोई सन्तान नहीं हुई थी इसलिये उसने अपने वड़े पुत्र व्यासका स्मरण किया। जव व्यासजी वनसे आये, तव योजनगंधाने कहा–हे पुत्र, वंशका उद्धार कर। आज्ञानुसार व्यासजीने अपने छोटे भाईकी स्त्रीसे सहवास

किया और पांडु तथा धृतराष्ट्र नामक पुत्रोंको जन्म दिया! इसके सिवाय विचित्रवीर्यकी एक दासी अर्थात् भोगस्त्री थी, उसके साथ भी संभोग किया और उससे विदुरको जन्म दिया। अब यह सोच लो कि, जब व्यासजी जन्मते ही बोले और वनको चले गये, तब तुम्हारा पुत्र जन्मते ही वार्तालाप करके चला गया, इसमें कैसे सन्देह हो सकता है?

खंडवणा—मेरी एक उमा नामकी सखी थी। उसने मुझे एक ऐसी विद्या सिखला दी कि, उसके प्रभावसे मैं देवदानवोंको आकर्षित करके बुला लेती थी। इस विद्यासे मैंने एक बार सूर्यको आकर्षित किया और उसके साथ यथेच्छ रतिक्रीड़ा की। यदि यह सत्य है, तो बतलाओ कि, मैं सूर्यके समागमसे दग्ध क्यों न हुई?

कंडरीक—जिस तरह कुन्ती सूर्यके साथ संभोग सुख भोगकर दग्ध नहीं हुई थी, इसी प्रकार तुम भी नहीं हुई!

खंडवणा—और एक बार मैंने अग्निदेवसे समागम करके गर्भ धारण किया और एक अतिशय तेजस्वी पुत्रको उत्पन्न किया, परन्तु मैं जली नहीं। यह कैसे? इसके लिये भी कोई उदाहरण दो।

एलाषाढ़—यमकी स्त्री धूर्मोणा एक बार होमशालामें हवन करनेके लिये गई और वहां अग्निके साथ रतिक्रीड़ा करने लगी। इतनेमें यमराज महाराज भी वहां जा पहुंचे। धूर्मोणा बहुत भयभीत हुई। उसने तत्काल

ही जुदा होकर अग्निको पानीके समान अपने पेटमें रख लिया। परन्तु इससे भी यह वात छुपी नहीं। स्त्रीको शिथिल अंग और शिथिल चित्त देखकर यमराजने समझ लिया कि, यह अपराधिनी है। उन्हें उसी समय देवसभामें जाना था, इसलिये वे धूमोंणाको पेटमें रखकर चल दिये। देवसभामें देवोंने हास्य करके पूछा–"तुम तीनों कुशल तो हो?" इससे लज्जित होकर यमने अपने पेटमेंसे धूमोंणाको निकाली। उधर अग्नि भी अपनी और गति न देखकर धूमोंणाके मुंहमेंसे निकलकर भागा और वनमें जाकर छुप गया। पीछे २ यमराज दौड़े। वनमें पहुंचकर उन्होंने एक हाथीसे अग्निके आनेके समाचार पूछे। परन्तु उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। तव यम कुपित होकर उसकी जिह्वा काटकर अपने स्थानपर आ गया। इस कथाके अनुसार यमकी स्त्री अग्निके संयोगसे भस्म नहीं हुई, तो तुम कैसे हो जातीं?

खंडवणा—पूर्वोक्त विद्यासे मैंने एक वार इन्द्रको भी आकर्षित करके उसके साथ संभोगसुख लूटा और एक इन्द्रके ही सदृश पुत्रको जन्म दिया। इस विषयमें मुझे तुमसे यह पूछना है कि, अप्सराओंको छोड़कर इन्द्रने मुझे कैसे भोगा?

शंस—एक वार गौतम ऋषिकी स्त्री अहिल्याके साथ इन्द्रने संभोग किया। जव यह वात गौतमको मालूम हुई, तो उन्होंने इन्द्रको श्राप दी, जिससे वह सहस्रभग हो गया। इससे गौतमके छात्रगण कामसे पीड़ित

होकर उसे बहुत कष्ट देने लगे । यह देख सब देवोंने गौतम ऋषिसे प्रार्थना की । इससे ऋषिने दया करके इन्द्रको छोड़ दिया और 'सहस्रभग'के स्थानमें 'सहस्र-लोचन' कर दिया । इसके पश्चात् इन्द्रने कुन्तीसे सह-वास किया और महाप्रतापी धनुर्धर अर्जुनको उत्पन्न किया । जब इन्द्रने अप्सराओंको छोड़कर अहिल्या और कुन्तीको भोगा, तब तुम्हें क्यों नहीं भोगता? तुम क्या उनसे कम हो?

खंडवणा—तुम मेरा नाम स्थान गोत्र और मायावी-पन आदि जानते हो कि, नहीं?

मूलदेव—तुम पाटलीपुर नगरके गौतम गोत्रज नागशर्मा ब्राह्मणकी नागश्री स्त्रीकी कूंखसे उत्पन्न हुई पुत्री हो । तुम्हारा खंडवणा नाम जगत्प्रसिद्ध है ।

खंडवणा—मेरा नागश्रीकी पुत्रीके समान रूप देख-कर तुम्हें मेरे विषयमें भ्रम हो गया है । वास्तवमें मैं उ-सकी पुत्री नहीं हूं । मैं तो वहांके राजाके रजक (धोबी) की बेटी हूं । दग्धिका मेरा नाम है । मेरा घर राजम-न्दिरके समान धनधान्यसे परिपूर्ण है । मैं एक हजार मजदूरोंके साथ अन्तःपुरके वस्त्रोंके धोनेका काम किया करती थी । एक वार मैं मजदूरोंके साथ धुलने योग्य वस्त्रोंको लेकर नदीपर गई थी । जब वस्त्र धुल गये और मजदूरोंने उन्हें धूपमे सुखा दिया, तब ऐसे जोरसे आँधी चली कि, सबके सब वस्त्र उड़ गये! मजदूर बहुत घब-ड़ाये । मैंने उनसे कहा तुम लोग जहां जाना चाहो, वहां

चले जाओ। चिन्ता मत करो । जो कुछ होगा, मैं राजासे निवट लूंगी। इसके पश्चात् मैं गोहका रूप धारण करके उद्यानमें विचरण करने लगी। जब प्रातःकाल हुआ तब मैंने यह सोचकर कि, मुझे कोई सचमुच गोह समझकर मार न डाले, लताका रूप धारणकर लिया और मैं एक अशोक वृक्षसे लिपट रही । उधर राजाने जब यह जान लिया कि, पवनसे वस्त्र उड़ गये हैं। इसमें मजदूरोंका और रजकीका कोई दोष नहीं है, तब वस्तीमें डुगडुगी पिटवा दी कि, "जो कपड़े धोनेवाले भयसे भाग गये हैं, वे वापिस आ जावें। उन्हें कोई दंड नहीं दिया जायगा।" यह सुनकर सब मजदूर अपने २ घर आगये और मैं भी लताका रूप त्याग अपने असली रूपमें घर पहुंच गई। इसके पीछे मेरा पिता उन्हीं कपड़ोंकी गठरी लेनेके लिये नदीके किनारे गया। परन्तु वहां गठरी बांधनेके जो चर्म बंधन थे, उन्हें गीदड़ खा गया था। यह देख वह वनमें इधर उधर चर्म बंधन ढूंढ़नेके लिये भटकने लगा। इतनेमें एक जगह एक चूहेकी पूंछ मिल गई। पिताने उससे अनेक बड़ी २ रस्सियां बनाई और गठरी बांधकर वह प्रसन्नतापूर्वक घर आ गया । अब कहो, यह बात सत्य है या असत्य?

शंस—शास्त्रोंमें वर्णन किया है कि, ईश्वरका लिंग। इतना बड़ा था कि, ब्रह्मा विष्णु उसका अन्त न पा सके और इसी प्रकार हनुमानकी पूंछ इतनी बड़ी थी कि, उससे उन्होंने उतनी बड़ी लंका अस्तव्यस्त करके जला

दी थी। ऐसी अवस्थामें चूहेकी पूंछका अनेक रस्सियोंके योग्य विस्तृत होना कौन वड़ी वात है?

खंडवणा—और मैं स्त्रीरूप छोड़कर गोह तथा लता कैसे हो गई?

शंस—पुराणोंमें सुना है कि, गान्धारीका वर एक वार मनुष्य भाव त्यागकर कुरूप कुद्रुम हो गया था। पहिले वह नहुष नामका राजा था, और उसने उस समय युद्ध करके इन्द्रको जीता था। इससे इन्द्रको कुपित हुआ देखकर बृहस्पतिने शाप दी, जिससे नहुष सर्प बन गया और वनमें चला गया। दैवयोगसे उसी समय पांचों पांडव भी उक्त वनमें पहुंचे। और उनमेंसे भीम विचरता हुआ सर्पके पास होकर निकला। वस, पास आते ही उसे सर्पने निगल लिया। जब युधिष्ठिरको मालूम हुआ, तब वे दौड़े हुए सांपके पास पहुंचे। सांपने उनसे सात प्रश्न पूंछे। जब युधिष्ठिरने उनका ठीक २ उत्तर दिया, तब सांपने भीमको वमन करके वाहर निकाल दिया और आप भी सांपकी पर्याय छोड़कर नहुप राजा हो गया। जब यह कथा सत्य है, तब तुम्हारी स्त्रीसे लता गोह होनेकी भी वात सत्य है।

खंडवणा—हे धूर्तराजो, जो तुम सब मेरी वात सत्य मानो, तो मैं तुमको भोजन देनेके लिये तयार हूं। और देखो, कदाचित् मैंने तुम्हें अपनी बुद्धिसे पराजित कर दिया, तो तुम सब संसारमें कौड़ीके तीन २ विकोगे।

चारों धूर्त—श्रीमतीजी, हमको जब साक्षात् विष्णु

और बृहस्पति नहीं जीत सकते हैं, तो तुम्हारी जैसी एक स्त्री कैसे जीत सकती है?

खंडवणा—अच्छा अब मेरा कौतुक देखो, मैं तुम्हें पराजित करती हूं। जिस समय पूर्वोक्त कपड़े उड़ गये थे, उसी समय मेरे चार दास भी कहीं भाग गये थे। सो मैं उक्त वस्त्रोंकी और दासोंकी खोजमें राजाकी आज्ञासे भ्रमण कर रही हूं और भ्रमण करती २ आज यहां तुम्हारे पास पहुंची हूं। मैंने अच्छी तरहसे पहिचान लिया है कि, तुम चारों ही मेरे भागे हुए दास हो और उन वस्त्रोंको भी तुम ही ले आये हो। अब यदि तुम मेरी यह वार्ता स्वीकार नहीं करते हो, तो सबको भोजन दो, और स्वीकार करते हो, तो वस्त्र-चोर और मेरे दास होओ!

यह सुनकर सबके सब धूर्त बड़े ही लज्जित हुए। दोनों प्रकारसे उत्तर देनेमें असमर्थ होकर बोले, हे खंडवणा, इस संसारमें तुमसे अधिक बुद्धिवान् शायद ही कोई होगा, जिसने हम जैसे धूर्तशिरोमणियोंको जीत लिया। अब कृपाकरके तुम किसी प्रकारसे सबको भोजन कराओ। क्योंकि सात दिनकी लगातार वर्षाके कारण भूखे रहनेसे हम लोगोंके प्राण निकल रहे हैं। खंडवणा अपनी इस प्रशंसासे और धूर्तोंकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर उसी समय स्मशानमें गई और वहांसे एक तत्कालके मरे हुए बालकको निकालकर तथा उसे स्नानादि कराके और वस्त्रादिसे सजाकर उज्जयनी नगरीमें गई। वहां एक

धनी अपने नानाप्रकारके व्यापारोंमें व्यग्र हो रहा था। उसके यहां जाकर इसने दीन होकर कहा—सेठजी, मैं एक गरीव ब्राह्मणकी अनाथिनी स्त्री हूं। मेरा कोई आश्रय नहीं है। आपके पास इसलिये आई हूं कि, आप कुछ कृपा करें, जिससे मैं इस वालकका भरणपोषण कर सकूं। सेठजीको ऐसी वातें सुननेकी कहां फुरसत थी? उन्होंने झुंझलाकर अपने नौकरसे कहा–इसे वाहर निकाल दो। आज्ञानुसार ज्यों ही सेवकने उसे वाहर निकालनेकी कोशिश की, त्यों ही वह पृथ्वीपर गिर पड़ी और थोड़ी देरमें रो रो कर चिल्लाने लगी कि, हाय! मेरे प्राणोंसे प्यारे वेटेको इस व्यापारीने गर्वसे अंधे होकर मरवा डाला! हाय! अव मैं क्या करूं? अव मुझे कौन सहारा देगा? मेरी आशाएँ कौन पूरी करेगा? जव सेठजीने उसे इस प्रकार विलाप करती, चिल्लाती, छाती पीटती, वाल विखराती देखी, तव उन्हें वड़ा भय हुआ। वे विचारने लगे कि, यह तो वड़ा उत्पात हुआ। इसका तो सचमुच ही पुत्र मर गया। यदि राजाको इस वातकी खवर लगेगी, तो मुझे वड़ा भारी दंड मिलेगा। यह सोचकर सेठजी उसे अपने परिवारसहित मनाने लगे कि, हे भगिनी, जो कुछ होनहार था, सो तो हो गया। अव विलाप करनेसे क्या होगा? यदि तुझे कुछ द्रव्य चाहिये, तो कह, मैं देनेको तयार हूं। ऐसा कहकर सेठजीने उक्त धूर्तिनीको अपने हाथकी रत्नजठित मुद्रिका उतारकर दे दी और उसे सौगंध खिला दी कि, वह इस वालकके

मरनेकी खवर राजाके पास न पहुंचने देवे । धूर्तिनी जो चाहती थी, वही हुआ । मुद्रिका लेकर वह उद्यानमें आई और धूर्तोंको दिखाकर वोली,–लो इससे आजका भोजन होने दो । इसके वाद मुद्रिका वाजारमें वेची गई और उससे भोजन सामग्री लाई गई । धूर्तसमाज भोजन करके बहुत ही सन्तुष्ट हुआ ।

इति पञ्चमाख्यान ।